भजन

तर्ज– हर कर्म करते चलेंगे ए वतन तेरे लिए

मैं हूं तेरी दुलहिन और मेरा दूल्हा तूं
अर्श में भी तूं ही है और फर्श में भी तूं
जिनसे मेरी निसवत है वोह श्यामा श्याम तूं
अब जागी हैं वाणी सुनकर अर्श की ये रूह
समझ गई वो किसके तन में छुपा हुआ है तूं
तुझको जाहिर करके छोड़ेंगी इक दिन ये रूह
और छ्ठे दिन में बोलें मोमिन अल्लाह कुलहूँ
कितनी देर हुई हमसे अब माफी दे दे तूं
सभी साथ को लेकर चल दो अर्ज करे ये रूह
हम तो हुकम के बांधे हैं और अपना हाकिम तूं
वो ही कर्म करेंगे हम जिसमें है राजी तूं
हम तो कुछ भी नहीं हैं प्रीतम जो कुछ है सो तूं

हर कर्म करते चलेंगे हर उद्दम तेरे लिए
हम हुकम पर मर मिटेंगे ए खसम तेरे लिए
1– सबसे पहले तेरे चरणों में मेरा प्रणाम है
तूं धनी मेरी आतम का तूं ही श्यामा श्याम है
जिसकी राह दुनियां ने देखी ये वो ही निजनाम है
साथ के बढ़ते चलेंगे अब कदम तेरे लिए

भजन

2- क्यों रब्द की हमने तुमसे,क्यों तुम्हें समझा जुदा
क्यों ना समझा लाड तेरा क्यों न ली लज्जत खुदा
दिल में ये ही दर्द लेकर हम फना में है फना
हम जीयेंगे हम मरेंगे,ए खसम तेरे लिए

3- जिन्दगी मेरी तुम्हीं हो,बंदगी मेरी तुम्हीं
अर्श में दुल्हा तुम्हीं हो,फर्श पर भी हो तुम्हीं
इश्क नजरों से पिलाने वाले प्रीतम हो तुम्हीं
जिन्दगी भर हम बजायेंगे हुकम तेरे लिए

4- अंगना का दुख दूर करके अपने चरणों में लिया
मेहर पल पल कोटि गुण की,अखंड सुख अपना दिया
गुण तुम्हारे हम न भूलेंगे मेरे प्यारे पिया
हम मिटा देंगे दिलों से हर भरम तेरे लिए